बुन्देली

एक भाषा वैज्ञानिक अध्ययन

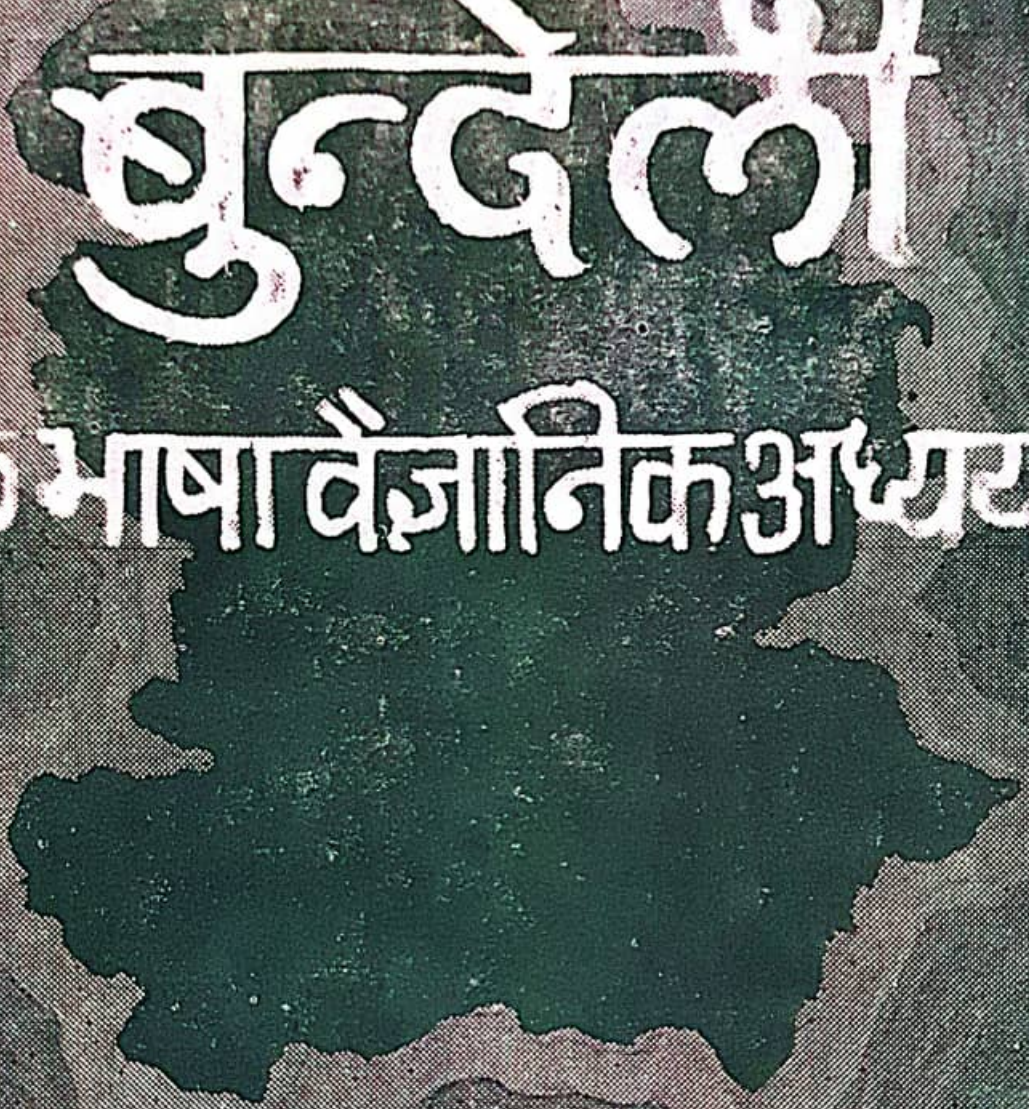

- दुर्गाचरण शुक्ल • कैलाशबिहारी द्विवेदी

बुन्देली

एक भाषा वैज्ञानिक अध्ययन

★

— लेखक —

आचार्य-दुर्गाचरण शुक्ल
एम. ए.

★

कैलाशविहारी द्विवेदी
एम.ए. (हिन्दी)
एम.ए. (भाषा-विज्ञान)

सम्पादक :
डॉ० गंगाप्रसाद गुप्त 'बरसैंया'

अध्यक्ष, हिन्दी-विभाग
शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, टीकमगढ़

★

प्रकाशक
कला-परिषद्, टीकमगढ़ [म०प्र०]

★ प्रकाशक :
कला-परिषद्
टीकमगढ़ (म०प्र०)

★ सर्वाधिकार सुरक्षित

★ प्रथम संस्करण
रामनवमी, १९७६
१००० प्रतियां
मूल्य- ६-००

★ मुद्रक
हरगोविन्द त्रिपाठी 'पुष्प'
राधा माधव प्रिंटिंग प्रेस,
टीकमगढ़ (म०प्र०)

★ आवरण चित्र
गुण सागर सत्यार्थी

दो शब्द

कला परिषद टीकमगढ़ ने 'बुन्देली : एक भाषा वैज्ञानिक अध्ययन' शीर्षक ग्रन्थ में जिन लेखों को सँजोया है, उनमें से एकाध लेख को छोड़ कर शेष सभी टीकमगढ़ से प्रकाशित 'ओरछा टाइम्स' में धारावाहिक रूप से प्रकाशित हुए हैं, और इन लेखों में जिन प्रेरणाओं का हमें सम्बल मिला उनमें हिन्दी के मूर्धन्य लेखक श्री कृष्णानन्द गुप्त; वयोवृद्ध पत्रकार पं श्री राम सेवक रावत, श्री प्रेमनारायण रूसिया, और पं० श्री श्यामनारायण कश्मीरी के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं।

वैसे श्री वीरेन्द्र केशव साहित्य परिषद् और बुन्देलखण्ड साहित्य परिषद् की सतत प्रेरणा का ही यह प्रतिफल है जो ओरछा में आयोजित केशव जयन्ती समारोह में इन लेखों को पढ़ा गया।

अतः उपरोक्त सभी के साथ साथ 'ओरछा टाइम्स' के सम्पादक श्री हरगोविन्द त्रिपाठी 'पुष्प', कला परिषद् के अध्यक्ष डा० गंगाप्रसाद गुप्त 'बरसैंयाँ' के हम कृतज्ञ हैं। साथ ही हम अपने अनन्य कलाकार के सहयोग को भी नहीं भूल सकते जिन्होंने आवरण पृष्ठ को अनुकूल रूप दिया।

— लेखक

प्रकाशकीय :—

कला-परिषद, ओरछा का गठन इस क्षेत्र की साहित्यिक, सांस्कृतिक कलात्मक सम्पदाओं और प्रतिभाओं के प्रकाशन के उद्देश्य से लगभग एक वर्ष पूर्व ही किया गया था। परिषद् ने बड़ी सफलता पूर्वक साहित्य, संगीत, नाटक, प्रदर्शनी एवं गोष्ठियों के अनेक कार्यक्रम आयोजित किये जिससे एक नवीन चेतना का प्रसार हुआ।

यह क्षेत्र प्राचीन साहित्य की दृष्टि से बहुत सम्पन्न है। उसके प्रकाशन की महती आवश्यकता है। बुन्देली पर भी शोध-कार्य की अनेक सम्भावनायें हैं ग्रन्थ प्रकाशन की योजना इन्हीं संभावनाओं को मूर्तरूप देने का अल्प प्रयास है।

केशव जयन्ती समारोह इस क्षेत्र का सर्वाधिक महत्पूर्ण साहित्यिक समारोह है। उस अवसर पर विद्वानों के बीच निबंध-पाठ और चर्चायें होती हैं। इस ग्रन्थ के लेखक श्री कैलाशबिहारी द्विवेदी व श्री दुर्गाचरण शुक्ल एक अरसे से इस दिशा में प्रयत्नशील हैं। बुन्देली पर वे प्रतिवर्ष अपने निबंधों का पाठ उक्त समारोह में करते रहे हैं, जिनकी विद्वानों ने सराहना की है। उन्हीं निबंधों को संकलित कर इस पुस्तक में प्रकाशित किया गया है।

पुस्तक में संकलित निबंधों में यद्यपि बुन्देली का व्यवस्थित एवं पूर्ण अध्ययन नहीं है, लेखकों ने भी कोई इस प्रकार का दावा नहीं किया। फिर भी यह निश्चित है कि इन स्फुट निबंधों के माध्यम से बुन्देली का वास्तविक रूप चरित्र उजागर होता है। दोनों लेखक इसी क्षेत्र के है। भाषा-विज्ञान के विद्यार्थी रहे हैं। उनका प्रस्तुतीकरण निर्विवाद रूप से अधिक आत्मीय और प्रामाणिकमाना जायेगा।

परिषद् ने बुन्देली का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन, बुन्देलखण्ड के अज्ञात रचनाकार, बुन्देलखण्ड परिचय आदि ग्रन्थों के प्रकाशन का संकल्प लिया था। गत वर्ष मानस चतुःशताब्दी के अवसर पर मानस मनीषा ग्रन्थ का प्रकाशन किया गया था जिस पर जनपद का 'तुलसी पुरस्कार' इन पंक्तियों के लेखक को मिला था। इस वर्ष हम रामनवमी के पावन पर्व पर केशव जयन्ती समारोह में 'बुन्देली एक भाषा वैज्ञानिक अध्ययन' पुस्तक का प्रकाशन करते हुए अत्यधिक हर्ष का अनुभव कर रहे हैं। आशा है सभी के सहयोग से हमारे अन्य संकल्प भी पूरे होंगे।

बाधायें आती हैं। अभी भी आईं। इसीलिए प्रकाशन में बिलम्ब हुआ। इसके कई कारण होते हैं जिनके विस्तार में जाना व्यर्थ है। हम लेखक द्वय एवं मुद्रक श्री पुष्प जी को धन्यवाद देते हैं जिन्होंने भरपूर सहयोग दिया।

परिषद की प्रकाशन समिति की सहमति से ही ग्रन्थों का प्रकाशन होता है· जिसके सदस्य पं० कृष्णकिशोर द्विवेदी, प्रो० प्रकाशचन्द चतुर्वेदी व श्री सूर्य-प्रकाश श्रीवास्तव हैं। परिषद के संरक्षक जिलाध्यक्ष डा० कृष्णा मुकुन्द भवरा-सकर हैं। मैं इन सबके प्रति आभार व्यक्त करता हूं।

साथ ही पुस्तक की आवरण सज्जा में श्री गुण सागर सत्यार्थी के अतिरिक्त श्री रईसुद्दीन सिद्दीकी का भी सहयोग रहा है जिसके लिए हम इन कलाकारों के आभारी हैं। प्रेस के सभी कर्मचारी भी धन्यवाद के पात्र हैं।

हमने पूरा प्रयास किया कि इसमें अशुद्धियाँ न हों किन्तु प्रेस की सीमाओं ने हमारे प्रयास को सार्थक न होने दिया। प्रेस व्यवस्थापक श्रीं पुष्प जी के न चाहते हुए भी प्रूफ की अशुद्धियां रह गई। भाषा-बिज्ञान से संबंधित चिन्हों का अभाव भो रहा। इन सबके लिए हम हृदय से क्षमा प्रार्थी हैं। जो भीं बन सका आप सभी को समर्पित है। इस आशा और विश्वास के साथ कि पूर्ण सहयोग और स्नेह मिलता रहेगा।

डॉ० गंगाप्रसाद गुप्त 'बरसैंया'
सम्पादक एवं अध्यक्ष
कला परिषद्, टीकमगढ़

अनुक्रमणिका

क्रमांक	विषय	पृष्ठ संख्या
:१:	बुन्देली : एक भाषा वैज्ञानिक परिचय	१
:२:	बुन्देली के क्षेत्रीय रूपों का विवेचन	१७
:३:	बुन्देली : समाजैतिहासिक संदर्भ	३१
:४:	बुन्देली के स्वरों का ध्वनि वैज्ञानिक अध्ययन	३९
:५:	बुन्देली की शब्द सम्पदा	५५
:६:	बुन्देली की लुप्त प्राय शब्दावली	६७
:७:	बुन्देली शब्दों का व्युत्पत्ति मूलक अध्ययन	७३
:८:	बुन्देली का अर्थ वैज्ञानिक अध्ययन	९७
:९:	बुन्देली शब्द युग्मों का अर्थ वैज्ञानिक अध्ययन	१०६
:१०:	बुन्देली में लिंग व्यवस्था	११४
:११:	ओ ना मा सी धम	१२१